शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (19-25), Jan-March 2019

अवध के नवाबों के काल में संगीत परंपरा

डॉ० शम्पा चौधरी
एसो0 प्रोफे0, संगीत विभाग
वी० एम०एल०जी० कॉलेज गाजियाबाद
ई–मेलः– shampa1410@gmail.com

सारांश

लखनऊ अवध की राजधानी ही नहीं, बल्कि पूरे हिन्दुस्तान (भारत) का दिल था, जिसका रूतबा उस समय दिल्ली से भी बड़ा था, वैसे यह दोनों शहर बहुत पुराने थे। मगर दिल्ली विदेशी आक्रमणों से जर्जर होकर अपना असलीपन खोकर सहमा हुआ शहर बन गया था। वहीं लखनऊ बहुत आगे बढ़कर अपनी नज़ाकत नफासत और शराफत के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गया था। यहाँ की तहजीब और तमीज़ 'पहले आप पहले आप' बेमिसाल थी, जो दुनिया के किसी शहर में नहीं पायी जाती थी।

भूमिका

अवध, विशेषकर लखनऊ, भारतीय इतिहास में संगीत और कलाओं का प्रमुख केंद्र रहा है। यहाँ के नवाबों ने शासन के अलावा भी नृत्य, संगीत, चित्रकला, साहित्य जैसी कलाओं के संरक्षण, संवर्धन व सार्वजानिकीकरण में अभूतपूर्व योगदान दिया। इस विस्तारित आलेख में अवध के नवाबों के संगीत संसार पर ऐतिहासिक घटनाओं, प्रमुख कलाकारों, दरबारी संस्कृति, संगीत शैलियों, समकालीन विरासत, और बदलती सामाजिक–सांस्कृतिक धरोहर के नए सुरों की गूंथन का समग्र विस्तार मिलेगा।

अवध के नवाबः– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अवध (Oudh) उत्तर भारतीय उपमहाद्वीप का ऐतिहासिक प्रदेश है, जिसकी राजधानी लखनऊ थी।

1. नवाब सआदत खाँ बुरहान–उल–मुल्क (1722–1739)
2. नवाब सफदरजंग (1739–1754)
3. नवाब शुजाउद्दौला (1754–1775)
4. नवाब आसफुद्दौला (1775–1797)
5. नवाब वज़ीर अली (1797–1798)
6. नवाब सआदत अली खाँ (1798–1814)
7. नवाब बादशाह ग़ाजीउद्दीन हैदर (1814–1879–1827)
8. नवाब नसीरूद्दीन हैदर (1827–1837)
9. मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन हैदर मुन्नाजान (1837)

10. नवाब मुहम्मद अलीशाह (1837–1842)
11. नवाब अमजद अलीशाह (1842–1847)
12. नवाब वाजिद अलीशाह (1847–1856)

मुगल साम्राज्य के पतन के साथ जैसे–जैसे केंद्रीय सत्ता कमजोर होती गई, स्थानीय नवाबों की स्वतंत्र शक्ति बढ़ती गई। नवाब वाजिद अली शाह अवध के अंतिम नवाब थे; 1856 में अंग्रेजों द्वारा उन्हें अपदस्थ कर दिया गया।

नवाबों के शासन काल में सम्पूर्ण राज्य पाँच स्थाई निजामतों (1) खैराबाद, (2) गोण्डा, बहराइच, (3) सुल्तानपुर (4) बैसवारा और (5) सलोन में विभाजित था शासन की सुविधा हेतु उपर्युक्त निजामतें 12 उपमण्डलों में विभक्त थे। (1) बारी बिसंवा, (2) दरियाबाद रूदोली, (3) देवां कुर्सी (4) नवाबगंज (5) गोसाईगंज, (6) मोहान, (7) रसूलाबाद, (8) सफीपुर, (9) बांगरमऊ मोइलवान, (10) सान्डी पाली, (11) मोहम्दी, (12) मियागंज शासन की इन इकाइयों में नवाब देशी अधिकारियों की सहायता से शासन संचालित करता था।

अवध में दरबारी संस्कृति और संगीत

मुस्लिम संप्रदाय के गीत

अवध में मुस्लिम (नवाबों) में संस्कृति पर हिन्दू लोक संस्कृति का विशेष प्रभाव है। ग्रामीण मुस्लिम समाज में इसका जीवंत रूप परिलक्षित होता है। मुस्लिम गीतों पर हिन्दू ग्राम्य गीतों में भी अधिकांश हुआ है।

कुछ ग्रामीण मुसलमान प्रायः कहते हैं कि हमारे मजहब (धर्म) में गाने की धार्मिक मनाही है किन्तु उनके यहाँ भी संस्कारों के अवसर पर गीत गाए जाते हैं। इनके गीतों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–1. हर्षदायक अवसर के गीत, 2. दाह रोने के गीत (शोक गीत)।

मुसलमानों में जन्म के अवसर पर प्रसन्नता की अभिव्यक्ति हेतु गीत जाए जाते हैं। मुसलमानों के यहाँ भी हिन्दुओं में प्रचलित सोहर का उलारा गाने की परम्परा है। केवल भाशा में कुछ अन्तर यत्र–तत्र तिहाई देता है, वह उर्दू शब्दों के अधिक प्रयोग की प्रवृत्ति। एक सोहर (उलारा) प्रस्तुत है–

''अल्ला ने करिली दुआ कबूल
हमारे घर बच्चा पैदा हुआ।
बच्चा कै दादी खुशी भई हैं,
जच्चा ने किया कमाल हमारे घर बच्चा पैदा हुआ।
मौला ने करिली हुआ कबूल, हमारे बच्चा पैदा हुआ।
बच्चा कै अम्मी खुसी भई है,
जच्चा ने किया कमाल हमारे घर बच्चा पैदा हुआ।
खुदा ने करिली दुआ कबूल, हमारे घर बच्चा पैदा हुआ।
बच्चा कै फूफी खुशी भई हैं,
जच्चा ने किया कमाल हमारे घर बच्चा पैदा हुआ।''

दरबारः संस्कृति का रंगमंच

- अवध के दरबार कलाओं के लिए केवल एक केंद्र ही नहीं, बल्कि प्रयोगशाला और प्रोत्साहन स्थल भी था।
- फ़ारसी, उर्दू, ब्रज, अवधी, हिंदी–बहुभाषी संगीत–साहित्य रचनाओं का उत्पादन और प्रदर्शन यहीं होता था।
- संगीत की सभा (महफिल), नृत्य–आयोजन, पारंपरिक त्योहार एवं सांस्कृतिक संवाद इस दौर की खासियत थी।
- मामूली गाँवों से लेकर नवाबी महलों तक, संगीत और नृत्य हर वर्ग में लोकप्रिय बने।

नवाबों का संगीत प्रमोद एवं संरक्षण

- नवाब स्वयं कलाप्रिय, रचनात्मक और संगीत–रसिक शासक थे।
- दरबार में संगीतज्ञों, कवियों, वादकों, नर्तकियों, तवायफों के लिए समुचित स्थान और सम्मान की व्यवस्था थीं।
- राजस्व का बड़ा हिस्सा दरबारी कलाकारों, संगीत प्रशिक्षकों, वाद्य–निर्माताओं और साहित्यकारों हेतु निर्धारित था।

प्रमुख नवाब और संगीत में योगदान

आसफ–उद–दौला (1775–1797)

- कला–संस्कृति एवं Architektur (बड़ा इमामबाड़ा, रूमी दरवाजा) के साथ, संगीत व नृत्य का संरक्षक।
- उनके समय में शास्त्रीय संगीत, वाद्य संगीत व विशिष्ट गायकी का विकास हुआ।
- पटियाला घराना, किराना घराना, लखनऊ घराना–इत्यादि घरानों का प्रारंभिक परिचय इन्हीं के दौर में हुआ।

वाजिद अली शाह (1822–1887)

- स्वयं उत्कृष्ट संगीतज्ञ, कवि, नर्तक व रचनाकार थे। लोकप्रिय उपनाम ''अख्तर'' या ''अख्तर पिया''।
- उन्होंने 'ठुमरी' गायकी और कथक नृत्य को नव सांस्कृतिक पहचान दी।
- उनके काव्य–संग्रह, संगीत निर्देश, प्रयोगधर्मी रचनाएं, जैसे ''दीवान–ए–अख्तर'', ''रासलीला'', ''हुस्त्रे–अख्तर'', ''भैरवी ठुमरी'' आदि आज भी साहित्यिक–संगीत जगत में विशिष्ट मानी जाती है।
- उनकी रचनाएँ–'ठुमरी–पारज', 'जोगी', 'जूही', 'शाह–पसंद' राग, अनेक नृत्य रूपक–लोकप्रिय हुए।
- वाजिद अली शाह द्वारा कलकत्ता के मैटियाबुर्ज में प्रवास के दौरान अवध की सांस्कृतिक छाप बंगाल तक पहुँची; वह भी कथक, ठुमरी, गजल, बिरहा आदि का प्रचार–प्रसार हुआ।

संगीत की प्रमुख शैलियाँ और नवाबी योगदान

1. ठुमरी

अवधी दरबार में 'ठुमरी' का अद्‌भुत विकास हुआ, जो प्रेम, श्रृंगार, विरह और नटखट भावनाओं से भरी होती हैं। उन्नीसवीं सदी के मध्य नवाब वाजिद अली शाह के समय में ठुमरी को अच्छा प्रश्रय

मिला और उसकी अच्छी परवरिश हुई। वो न सिर्फ अच्छे ठुमरी गायक थे बल्कि अख्तर पिया नाम से खुद ठुमरियां लिखते थे। बाईजी, मोतीबाई, गौहार जान, मुन्नी बाई जैसी नामचीन तवायफों के ठुमरी प्रस्तुतीकरण ने इसे लोक–जनों तक पहुँचाया।

अवध में ठुमरी गायन एक संस्थान रहा है, बड़ा प्रबल सिलसिला रहा है। कथक आचार्य महाराज बिन्दादीन की ठुमरियां इस बात की सुन्दर दलील है। उस परम्परा में चौलक्खी वाले वज़ीर मिर्जा फरूखाबादी क़दर पिया से लेकर पिया की एक ठुमरी यहाँ प्रस्तुत है–

ए री गुइया में कैसे भेजूं पाती
क़दर पिया को कैसे भेजूं पाती
एक तो रैन अंधेरी पापिन
दूजे सूनी सेज नागिन
तीजे मोरा बाला जोबन, हाय लजाती
कैसे भेजूं पाती

जाने आलम के परीखाने में ठुमरी उनकी परियों के साथ–साथ थीं क्योंकि सब की सब ठुमरी गायन में पारंगत थीं। शाही स्टेज के अलावा जनमंच पर भी ठुमरी खूब गायी जाती थी जहाँ उसको समझने वोल मौजूद होते थे। नवाब वाजिद अली षाह के दरबार के मशहूर सितार वादक गुलाम रजां खाँ पर रजाखानी गत की छाया आज भी मिलती है और इस तरह ठुमरी ने गायकों के साथ–साथ वादकों का दिल भी छीन लिया।

ठुमरी को अवध के आस–पास अंचल की बोलियों और लोक की तरंगों से नागरी रूप में सजा–संवार कर राज्याश्रय देने का श्रेय अवध के राज घरानों को भी कुछ कम नहीं है। कथक नृत्य और ठुमरी का गहरा संबंध अवध दरबार में स्थापित हुआ।

2. कथक

कथक नृत्य का लखनऊ घराना नवाबों के संरक्षण में अपने स्वर्णिम युग में पहुँचा। मानव समाज में नृत्य की परिभाषा है– ताल और लय के साथ अभियन करना। भारतीय नाट्यशास्त्र के आध ाार पर नर्तन के तीन भेद हैं–नाट्य, नृत्य और शास्त्रीय नृत्य में वे सब गुण पाये जाते हैं। भारत में शास्त्रीय नृत्यों की बड़ी पुरानी परम्परा है। यहाँ चारों वेदों की सहायता से पंचम वेद 'नाट्यशास्त्र' की सूचना की गई। ऋग्वेद से साहित्य, यजुर्वेद से क्रियात्मकता, अथर्ववेद से रस वैभव और सामवेद से संगीत प्राप्त किया गया।

इस पंचम वेद के प्रणेता भरतमुनि हुए। भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में कथक, भरतनाट्यम, मणिपुर, कथकली, मोहनीअट्टमू, कुचीपुड़ी, ओडिसी आदि प्रमुख हैं। कथक नृत्य शैली का क्षेत्र उत्तर भारत है और ये सच है कि कथक ही एक ऐसा नृत्य है जो अपने पांव के नीचे की ज़मीन को आसमान बनाना चाहता है।

शब्द कल्पद्रुम से अयोध्या को ही कथक का प्रथम केन्द्र माना गया है। कथक जन्म मन्दिरों के प्रांगण में आराधना छन्दों के साए में हुआ। अवध धाम के बाद लखनऊ इसका बसेरा बना। कथक गुरु विक्रम सिंह ने कथक को लखनऊ का गौरव कहते हैं।

अवध की इस आंतरिक लय से जुड़ने में आम आदमी अपनी महान–परम्पराओं शानदार विरासत और अमूल्य धरोहरों के प्रति जागृत हो और अवध संस्कृति को जान–समझकर वह भी ''आनन्द–भाव'' की तरफ कदम बढ़ाये। अवध से परिचय होने का अर्थ है जीवन का अधिक सुखद हो जाना, जीवन को एक नया अर्थ मिल जाना और जीवन का सार्थक हो जाना। कालका, बिंदादीन, अच्छन महाराज, शंभू महाराज जैसे महान नर्तक अवध दरबार से संबद्ध थे।

3. गजल, दादरा, ख्याल, कजरी, चैती इत्यादि

- दरबार में उर्दू गजल पर जोर, साथ ही दादरा, चैती, कजरी जैसी लोकधुनों को 'शास्त्रीयता' दी गई।
- शास्त्रीय संगीत (ख्याल, ध्रुपद) भी दरबार में उतना ही प्रसिद्ध था।
- दरबारी कलाओं में वाद्य संगीत–सितार, तबला, सारंगी, पखावज, तानपुरा प्रमुख स्थान रखते थे।

4. लखनऊ घरानाः संगीत और नृत्य की पहचान

- ''घराना'' प्रणाली भारतीय संगीत में महत्त्वपूर्ण संरचना है। लखनऊ घराना खास तौर पर कथक और ठुमरी के लिए मशहूर है।
- वाजिद अली शाह और अन्य नवाबों के संरक्षण में इस घराने की तकनीक, प्रस्तुति, भाव–भंगिमा, गायकी और ताल संरचना विकसित हुई।
- इसी दौर में कथक कथ्य, भाव, सूक्ष्मता और अभिव्यक्ति की दृष्टि से परिपक्क हुआ।

5. ''गंगा–जमुनी तहजीब'' और सांस्कृतिक समन्वय

- अवध के नवाबों के समय में भारतीय–ईरानी–सुन्नी–शिया–संस्कृति का दुर्लभ संगम हुआ, जिसे ''गंगा–जमुनी तहज़ीब'' कहा गया।
- हिंदू–मुस्लिम, ब्रज–अवधी–उर्दू भाषाओं की संस्कृति, लोक–परंपरा और शास्त्रीयता का जो मेल अवध में हुआ, उसकी मिसाल दुर्लभ है।
- ईद, होली, दीवाली, मुहर्रम–हर पर्व पूरी सांस्कृतिक एकता के साथ मनाया जाता था।

6. कलाकार, परीखाना और तवायफ

- अवध में ''परीखाना'' या तवायफों की कोठी–न केवल गीत–नृत्य का केंद्र, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक विमर्श का गढ़ थीं।
- गायक, विदूषियाँ, नर्तकियाँ–जो काव्य, संगीत, वादन, नृत्य, शेरो–शायरी में निष्णात थीं–दरबार की आवश्यक अंग थीं।
- बाईजी, गौहार जान, छप्पन छुरी, रसूलन बाई जैसी विभूतियाँ दूर–दूर तक प्रसिद्ध हुईं।

7. नवाबी संगीतः जनता तक यात्रा

- दरबारी संगीत ''जन संगीत'' बनता गया–त्योहारों, मेलों, बारात, कव्वाली, मेहफिल, नात, बिरहा, खुदकर–हर जगह नवाबी संस्कार और संगीत का प्रभाव दिखने लगा।
- लोक संगीत व ठुमरी, दादरा, कजरी जैसी शैलियाँ आम अवधी जनमानस की अभिव्यक्ति बन गई।

8. अवध संगीत का समकालीन प्रभाव एवं विरासत

- लखनऊ आज भी कथक, ठुमरी, गजल, वाद्य संगीत, नवाबी शायरी, तवायफ संस्कृति का केंद्र है।
- भारत की प्रमुख संगीत संस्थाएँ–भातखंडे संगीत महाविद्यालय, कथक केंद्र, अवधी लोक–संगीत अकादमी–अवध की नवाबी विरासत को आगे बढ़ा रही है।
- लखनऊ घराना, कथक, ठुमरी में 'वाजिद अली शाह' के योगदान को आज भी विश्वस्तर पर मान्यता प्राप्त है।
- बंगाल के मैटिया बुरज़ क्षेत्र में वाजिद अली शाह के प्रवासी दरबार ने बंगाली संगीत एवं नृत्य पर भी अमिट छाप छोड़ी।

9. समकालीन सरीकार और नई ऊर्जा

- अवध का संगीत संस्कृति आज न केवल अपनी जड़ों, बल्कि वैश्विक फलक पर भी पहचान बना रहा है।
- बॉलीवुड, लोकप्रिय संगीत, लखनऊ की महफिलें, लोक साहित्य, अंतर्राष्ट्रीय संगीत महोत्सवों में अवध की छाया देखी जा सकती है।
- विश्व के कई कथक–ठुमरी कलाकार अपनी शैली के मूल में अवध को मानते हैं।

उपसंहार

अवध के नवाबों और उनके संगीत संसार ने भारतीय संगीत, नृत्य, कविता, शायरी, और सांस्कृतिक समन्वय की जो विरासत दी, वह अनमोल है। उनका संरक्षण, कलाप्रियता, आधुनिकी सोच और समन्वयमूलक दृष्टि ने अवध को भारत ही नहीं, विश्व के सांस्कृतिक नक्शे पर विशेष स्थान दिलाया है। यह गौरवपूर्ण परंपरा आज भी जीवंत है और समय के साथ अपनी विधिता, रंग और मिठास से दुनिया को समृद्ध कर रही है।

संदर्भ

1. विकिपीडिया : अवध के नवाब, वाजिद अली शाह
2. TORNOS India – Music in Awadh, Nawab Wajid-Ali-Shah – a great patron of music.
3. Jagran Josh: अवध
4. सांस्कृतिक विरासत पर – Sanskriti IAS: नवाब वाजिद अली शाह
5. Testbook: अवध के अंतिम नवाब, कथक और संगीत
6. IAJESM, June 2024: Development of Awadh under the Nawabs
7. Peepul Tree: Bhatkhande Music Institute: A Nawabi Fairy Tale
8. Sahapedia: Nawabi Legacy of Splendour and Culture
9. Gulf News: Celebrating the cultural heritage of Awadh
10. GurukulJournal: Development of Awadhi culture in Calcutta under Nawab

11. बिसारिया, डॉ0 राकेश कुमार. लखनऊ मण्डल में 1857 का स्वतंत्रता संग्राम. पृ0 सं0 – 1.
12. सूर्यवंशी, सरनाम सिंह. गदर की अनकही कहानी अवध के अन्तिम बादशाह विरजिस कदर. पृ0 सं0 – 7.
13. प्रवीन, डॉ0 योगेश. ताजदारे अवध. पृ0 सं0 – 5.
14. बिसारिया, डॉ0 राकेश कुमार. लखनऊ मण्डल में 1857 का स्वतंत्रता संग्राम. पृ0 सं0 – 10.
15. प्रवीन, डॉ0 योगेश. बहारे अवध. पृ0 सं0 – 134–135.
16. सिंह, डॉ0 विद्या विंदू. अवधी लोकगीत विरासत. पृ0 सं0 – 118, 119.
17. प्रवीन, डॉ0 योगेश. आपका लखनऊ. पृ0 सं0 – 99.
18. प्रवीन, डॉ0 योगेश. आपका लखनऊ. पृ0 सं0 – 100.
19. प्रवीन, डॉ0 योगेश. आपका लखनऊ. पृ0 सं0 – 101.
20. प्रवीन, डॉ0 योगेश. आपका लखनऊ. पृ0 सं0 – 117.
21. टंडन, लालजी. अनकहा लखनऊ. पृ0 सं0 – 14.
22. नाहीद, नुसरत. लखनऊ संस्कृति के रंग. पृ0 सं0 – 67.